श्रीत्रिगुणानन्द शुक्ल रचित 'श्रीसुभाषचरितम्' महाकाव्य में रस का स्वरूप

RENU KUMARI
Research Scholar, Department of Sanskrit, H.P. University, Summerhill

सार संक्षेपिका

गर्ग गोत्रीय पं0 त्रिगुणानन्द शुक्ल का समस्त जीवन पठन–पाठन में व्यतीत हुआ। इनका जन्म 31 अक्तूबर, 1916 ई. को हुआ था। यह सरल, सरस, अलंकृत और परिष्कृत शैली के लेखक हुए हैं। काव्य शैली की जो स्वाभाविक सुन्दरता श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में पाई जाती है, वह संस्कृत के परवर्ती काव्यों में प्रायः कम ही होती है। इसके मनोरम वर्णनों में रसात्मकता प्रचुर परिमाण में पाई जाती है। भाषा भावों के अनुकूल है। महाकाव्यकार त्रिगुणानन्द शुक्ल रसों के उत्कृष्ट ज्ञाता थे। उन्होंने महाकाव्य श्रीसुभाषचरितम् में अनेक रसों का वर्णन किया है, परन्तु वीर रस का उल्लेख सम्पूर्ण महाकाव्य में प्रदर्शित होता है। जिसके अध्ययन मात्र से ही देशभक्ति की भावना जागृत होती है।

बीज शब्द

त्रिगुणानन्द शुक्ल, श्रीसुभाषचरितम्, रस।

भूमिका

संस्कृत साहित्य विश्व साहित्य के अन्तर्गत प्राचीनतम् उपलब्ध साहित्य है। संस्कृत साहित्य की विशालता, व्यापकता एवं विविधता को देखते हुए इसे दो खण्डों में विभाजित किया गया है– वैदिक तथा लौकिक।

वेदोत्तर काल में रामायण तथा महाभारत नामक आर्ष काव्यों की रचना हुई। उस समय से लेकर आज तक अनेक लब्धप्रतिष्ठ कवियों की रचनाएं प्रकाश में आई। इस शृंखला में भास, अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, भवभूति, भामह इत्यादि अनेक विख्यात कवि हुए हैं। आधुनिक समय में भी ऐसे बहुत से कवि हुए हैं। इसी शृंखला में कवि त्रिगुणानन्द शुक्ल भी एक जाना–पहचाना नाम है। इनका संस्कृत साहित्य में बहुत योगदान है।

गर्ग गोत्रीय पं0 त्रिगुणानन्द शुक्ल का समस्त जीवन पठन–पाठन में व्यतीत हुआ। इनका जन्म 31 अक्तूबर, 1916 ई.[1] को तथा मृत्यु 26 नवम्बर, 1997[2] को हुई थी। यह सरल, सरस, अलंकृत और परिष्कृत शैली के लेखक हुए हैं। काव्य शैली की जो स्वाभाविक सुन्दरता श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में पाई जाती है, वह संस्कृत के परवर्ती काव्यों में प्रायः कम ही होती है। इसके मनोरम वर्णनों में रसात्मकता प्रचुर परिमाण में पाई जाती है। भाषा भावों के अनुकूल है। इनकी कुल छः रचनाएं उपलब्ध हैं, जिनमें चार तो प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु जो दो प्रकाशनाधीन थी वह लेखक की मृत्यु के उपरान्त अप्रकाशित ही रह गई हैं। इसके अतिरिक्त लेखक ने अनेक पत्र–पत्रिकाओं में सम्पादन का कार्य भी किया है। लेखक की प्रकाशित और अप्रकाशित सभी रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं–

प्रकाशित रचनाएं

- वेदान्त सिद्धान्त और व्यवहार (षष्ठ संस्करण), 1986 ई.
- अध्यात्म रामायण में अध्यात्म चिन्तन, 1986 में
- विप्लवकेन्द्र चन्दननगर 1991 ई.
- श्रीसुभाषचरितम्

अप्रकाशित रचनाएं

- गया–महात्म्य
- गुरू–दर्पण (हिन्दी अनुवाद)[3]

पण्डित त्रिगुणानन्द शुक्ल विरचित श्री सुभाषचरितम् एक सरस एवं ललित काव्यग्रन्थ है। यह सरल एवं सुबोध संस्कृत में तथा प्रा×जल शैली में रचित काव्य है। इसमें प्रा×जल शैली में रचित काव्य है। इसमें प×चदश सर्गों में राष्ट्रनेता सुभाषचन्द्र बोस का जीवनचरित तथा उनके वीरोचित क्रियाकलाप विस्तारपूर्वक वर्णित है।

संस्कृत साहित्य के अनुसार रस का स्वरूप

संस्कृत साहित्य में रस का अतीव महत्त्व है। काव्य में रस से अभिप्राय है काव्यानन्द, अर्थात् रस काव्य अथवा नाटक से प्राप्त होने वाला आनन्द है। साहित्यदर्पण में काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द का सहोदर कहा गया है।[4]

प्रथम लौकिक और आदिकाव्य रामायण का आरम्भ और अन्त दोनों ही करूण रस से हुआ है–

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत् क्रौ×चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।[5]

आदि कवि ने रामायण में श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर और भयानकादि रसों का वर्णन किया है, परन्तु उसमें अधौरस करूण रस ही माना गया है।[6] अग्निपुराण में श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत तथा शान्त नामक रसों को स्वीकार किया है।[7]

संस्कृत साहित्य की परम्परा में अनेक साहित्याचार्य हुए हैं। जिन्होंने रस को प्रमुखता दी है, परन्तु इनमें भरतमुनि सर्वश्रेष्ठ हैं। भरतमुनि ने रस का स्वरूप 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रस निष्पतिः[8] निर्धारित किया है। अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस निष्पन्न होता है। रस की प्रमुखता को बतलाते हुए मुनि ने स्वयं ही कहा है कि–

'न हि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते'।[9] अर्थात्– रस के बिना किसी अर्थ की प्रवृत्ति काव्य में नहीं होती। रस का जो स्वरूप इन्होंने निर्धारित किया है, उन्हीं का उत्तरवर्ती आचार्यों ने विस्तारपूर्वक वर्णन अपनी रचनाओं में किया है।

रसात्मक वाक्य[10] को ही काव्य मानने वाले आचार्य विश्वनाथ के अनुसार विभाव, अनुभाव तथा स×चारी भावों के द्वारा अभिव्यक्त होकर रति, हास आदि स्थायी भाव सामाजिकों के हृदय में रसता को प्राप्त करते हैं।[11]

भरतमुनि प्रतिपादित रससूत्र में मुख्य रूप से विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव एवं रस–निष्पत्ति आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। अतः प्रथमतः इनका स्वरूप स्पष्ट होना चाहिए।

विभाव

रस की अनुभूति कराने वाले कारणों को ही विभाव कहा जाता है। दशरूपककार ने इसके आलम्बन तथा उद्दीपन नाम से दो भेद माने हैं–

आलम्बनोद्दीपनत्वप्रभेदेन स च द्विधा।[12]

जिनका सहारा लेकर रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं। जैसे सीता को देखकर राम के मन में और राम को देखकर सीता के मन में रति भावना की उत्पत्ति होती है और उन दोनों को देखकर सामाजिक के भीतर रस की अनुभूति होती है, उसको 'आलम्बन–विभाव' कहते हैं। आलम्बन विभाव में उत्पन्न रत्यादि भाव को जो पुष्ट करते हैं, अथवा उसे उद्दीप्त करते हैं उन्हें उद्दीपन विभाव कहा जाता है। चाँदनी, उद्यान एकान्त स्थान आदि के द्वारा उस रति का उद्दीपन होता है। इसलिए उनको शृंगार रस के 'उद्दीपन–विभाव' कहा जाता है।[13]

अनुभाव

भरतमुनि के अनुसार जो वाचिक या आर्घिक अभिनय के द्वारा रत्यादि स्थायी भाव की अन्तः अभिव्यक्ति रूप अर्थ का बाह्य रूप में अनुभव कराता है, उसको 'अनुभाव' कहते हैं।[14] दशरूपककार के अनुसार स्थायी एवं स×चारी भाव के अनुभव की सूचना देने वाले विकारों को अनुभाव कहते हैं।[15]

व्यभिचारी भाव

जो रसों में अनेक रूप से विचरण करते हैं और रसों को पुष्ट कर आस्वाद के योग्य बनाते हैं उनको 'व्यभिचारिभाव' कहते हैं। दशरूपककार के अनुसार– जिस प्रकार समुद्र में लहरें उठती और विलीन होती हैं। उसी प्रकार रति आदि स्थायी भावों में व्यभिचारी भावों का अविर्भाव और तिरोभाव होता है।[16] अलङ्कारशास्त्र में स×चारी भावों को व्यभिचारी नाम भी दिया गया है। भरतमुनि के रससूत्र में 'व्यभिचारी' शब्द का ही प्रयोग मिलता है। इनके अनुसार व्यभिचारी भावों की संख्या तैंतीस है।[17]

रस निष्पत्ति

रस–निष्पत्ति से तात्पर्य रस की उत्पति से है। रस की उत्पत्ति का सर्वप्रथम उल्लेख भरतमुनि ने 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।'[18] द्वाराअपने नाट्यशास्त्र में किया है। अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारिभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। भरतमुनि के 'रससूत्र' की व्याख्या में ही उत्तरवर्ती आचार्यों ने अपनी शक्ति लगायी है जिसके परिणामस्वरूप ही (1) उत्पत्तिवाद (2) अनुमितिवाद (3) भुक्तिवाद (4) अभिव्यक्तिवाद इन चार सिद्धांतों का विकास हुआ है।

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में प्रयुक्त अर्धौरस तथा अर्धैरस :

श्रीसुभाषचरितम् एक देशभक्ति से परिपूर्ण महाकाव्य है। इसमें एक से अधिक रसों का प्रयोग किया गया है, जिसमें शृंगार रस का उल्लेख कहीं भी नहीं हुआ है। देशभक्तिपूर्ण महाकाव्य होने के कारण इसमें वीर रस अङ्गीरस के रूप में सर्वत्र विद्यमान है। जिसका अनुमान नायक के इन वीरतापूर्ण वचनों 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' इत्यादि से सहज ही हो जाता है। इसके अतिरिक्त श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में करूण, शान्त, अद्भुतादि रसों का प्रयोग महाकाव्यकार ने अर्धैरस के रूप में किया है। जिनका क्रमशः वर्णन इस प्रकार है–

वीररस (अर्धौरस)

लक्षण–उत्कृष्ट धीरोदात्त गुणों से युक्त (नायक वाला, उत्कृष्ट) उत्साह स्थायी भाव वाला रस वीर कहलाता है। यह महेन्द्र देवता तथा सुवर्ण वर्ण वाला होता है। विजेतव्य (जीतने योग्य) आदि को आलम्बन बनाकर, उनकी चेष्टाएं जो उद्दीपन विभाव का कार्य करती हैं। धनुष, सेना आदि सहायों का अन्वेषण ही वीररस के अनुभाव हैं। धृति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क, रोमा×चादि इसके व्यभिचारी भाव हैं।[19]

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में वर्णित वीररस के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं–

''स्वरक्तं ददध्वं स्वतन्त्रं करिष्ये स्वदेशाभिमानिभ्य एवं हि वाक्यम्।
इदं शासनं त्वस्य चाह्वानरूपं समाश्रुत्य यतत्परास्ते बभूवुः।।''[20]

अर्थात् स्वदेशाभिमानी लोगों के लिए उनकी पुकार थी– 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें स्वतन्त्र करूँगा'। उनका यह आदेश युद्ध के लिए आह्वान था जिसे सुनते ही लोग तत्पर हो जाते थे।

प्रस्तुत पद्य में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छा ही आलम्बन विभाव है। सुभाषचन्द्र बोस के द्वारा स्वतन्त्रता के बदले खून की मांग करना उद्दीपन विभाव है। उनके आदेश अथवा आह्वान को सुनकर लोगों का युद्ध के लिए तत्पर हो जाना ही अनुभाव है। बोस के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए खून देने का तर्क रखना ही व्यभिचारी भाव है। इन विभावों से परिपुष्ट होकर उत्साह स्थायी भाव वीर रस के रूप में परिणत होता है। यह युद्ध वीर रस की प्रतीति करवाता है।

इतोऽपि सैन्यैरतिमात्रमुग्रैः कृतानि नष्टानि सुविक्रमेण
तेषां विमानानि सुवीरलोकै मृर्तास्त्वनेके रणभूमिमध्ये।।[21]

अर्थात् इधर से हमारी सेना के वीरों ने भी उनके अनेक विमानों को नष्ट किया। इन वीरों में अनेक रणभूमि में मारे गए फिर भी उन्होंने अनेक विमान मार गिराए।

उपर्युक्त पद्य में युद्ध में वीर–जवानों की वीरता का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना धैर्य बनाए रखा और विजय प्राप्त की। इसमें वीरों द्वारा अनेक विमानों को नष्ट किया जाना आलम्बन विभाव है। इस प्रक्रिया में हमारी सेना के अनेक वीरों का भी रणभूमि में शहीद होना उद्दीपन विभाव है। इससे क्रोधित होकर हमारे वीर ज़वानों द्वारा दुश्मन सेना में हमला करना और उनके अनेक विमानों को मार गिराना ही आलम्बन विभाव है। आवेग, उग्रता, क्रोध इत्यादि इसमें व्यभिचारी भाव हैं। उत्साह स्थायी भाव होने से इसमें वीर रस है।

प्रसन्ना वयं साधनायाः प्रचारं विलोक्य प्रकर्षेण चेष्टाप्रकारम्।
वयं साधयामः स्वकार्यं तु सर्वं न चेदन्यथा पातयामः शरीरम्।।[22]

अर्थात् साधना के प्रचार तथा प्रभावकारी रूप में चेष्टा के प्रकार को देखकर हम लोग प्रसन्न हैं। अतः हम लोग अपना सारा कार्य सिद्ध करेंगें अथवा शरीर त्याग करेंगें।

उपर्युक्त पद्य में स्वतन्त्रता प्राप्ति अथवा शरीर त्याग का लक्ष्य आलम्बन विभाव है। स्वतन्त्रता रूपी साधना के प्रचार तथा प्रभावकारी रूप में की गई चेष्टाएं अथवा गतिविधियां उद्दीपन विभाव हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए लोगों द्वारा किए जाने वाले कार्यों से होने वाली प्रसन्नता अनुभाव है। राष्ट्र के लिए प्राणों की परवाह न करने का गर्व ही व्यभिचारी भाव है। उत्साह रूपी स्थायी भाव होने से इसमें युद्ध वर्णन से वीर रस की अनुभूति होती है।

अर्घैरस

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में मुख्य वीर रस के अतिरिक्त गौण रूप से अन्य रसों का भी वर्णन मिलता है। इन रसों में सर्वप्रथम करूण रस का वर्णन किया जा रहा है।

करूण रस

लक्षण –प्रिय वस्तु के अथवा पुत्रादि के विनष्ट होने से अथवा मृत्यु होने से तथा अनिष्ट की प्राप्ति से करूण रस उत्पन्न होता है। इसका स्थायी भाव शोक होता है। शोचनीय विनष्ट प्रियजन इसके आलम्बन माने गए हैं। उस (शोच्य) की दाहादिकर्म उद्दीपन विभाव होते हैं। दैवनिन्दा, भूमिपात, रोदन और विलापादि, विवर्णता, उच्छवास, निःश्वास, स्तम्भ एवं प्रलापादि इसके अनुभाव हैं। निर्वेद, मोह,

अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, उन्माद और चिन्ता आदि करूण रस के व्यभिचारी भाव होते हैं।[23]

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में वर्णित करूण रस के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं–

'स्वयं नेहरूस्तस्य नेतुः सुमित्रं समागत्य दृष्ट्वा विषादं जगाम।
द्वयोर्मित्रयोः कार्यजातं प्रसिद्धं स्वदेशस्य हेतोर्वयं संस्मरामः।।'[24]

अर्थात् उन नेता के परम मित्र पण्डित जवाहर लाल नेहरू उनके शव का दर्शन कर अत्यन्त दुःखी हुए। आज भी हम लोग दोनों मित्रों के द्वारा अपने देश के लिए किए गए सुप्रसिद्ध कार्यों का स्मरण करते हैं।

प्रस्तुत पद्य में नेता सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु के उपरान्त उनके परम मित्र पण्डित जवाहर लाल नेहरू द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रिया के रूप में करूण रस का वर्णन किया गया है। यहां पर सुभाषचन्द्रबोस आलम्बन विभाव है। उनके शव के दर्शन से उत्पन्न दुःख ही उद्दीपन विभाव है। इस प्रक्रिया में अत्यन्त दुःख की अनुभूति का होना ही अनुभाव है। विषाद, मरण, स्मृति आदि इसके व्यभिचारी भाव हैं। शोक रूपी स्थायी भाव होने से इसमें करूण रस की अनुभूति होती है।

स तेषां सुसेवा विधातुं विचार्य गृहात्प्रस्थितोऽज्ञातरूपे जनानाम्।
पिता सर्वकार्यं परित्यज्य दुःखी तथैवास्य माता रूरोदासहाया।।[25]

अर्थात् उनकी सेवा करने का विचार करके, लोगों को बिना बताये ही अज्ञात रूप से उन्होंने घर से प्रस्थान किया। दुःखी हो पिता ने अपना सारा काम छोड़ दिया तथा उनकी माता भी असहाय होकर रोने लगी।

उपर्युक्त पद्य में बालक सुभाष के मन में जनसेवा का विचार जो भयानक अकाल से पीड़ित थे, आलम्बन विभाव है। इस उद्देश्य से बिना लोगों को बताए ही उनका अज्ञात रूप में घर से चले जाना उद्दीपन विभाव है। उनको घर में न पाकर चिन्तित होकर माता का करूण विलाप करना और पिता द्वारा दुःखी होकर सारा काम छोड़ देना अनुभाव है। मोह, चिन्ता, आवेग, विषाद, औत्सुक्य इत्यादि इसके व्यभिचारी भाव हैं। 'शोक' स्थायी भाव होने से इसमें करूण रस की प्रतीति होती है।

शान्त रस

लक्षण –आचार्य विश्वनाथ के अनुसार साहित्य दर्पण में शान्त रस का लक्षण इस प्रकार है। शान्त रस का स्थायी भाव शम होता है। इसमें एक उत्तम प्रकृति का नायक होता है। वर्ण कुन्द (पुष्प विशेष) और चन्द्रमा की तरह सुन्दर कान्ति वाला तथा सत्ययुग के विष्णु के अवतार भगवान लक्ष्मीनारायण देवता हैं। अनित्यत्व, दुःखमयत्व आदि रूप से सम्पूर्ण संसार की असारता का ज्ञान अथवा परमात्मा का

स्वरूप इस रस का 'आलम्बन' होता है और ऋषि आदि के पवित्र आश्रम, पवित्र तीर्थ, रमणीय एकान्तवन तथा महात्माओं का संग आदि 'उद्दीपन विभाव' है। रोमा×चादि इसके अनुभाव होते हैं। निर्वेद, हर्ष, स्मरण, मति, प्राणियों पर दया आदि इसके स×चारीभाव होते हैं।[26]

श्री सुभाषचरितम् महाकाव्य में वर्णित शान्त रस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

यदाऽसौ शिशुर्ह्यष्टवर्षीय आसीत्तदा श्रीस्सदाऽक्रीडदस्य स्वगेहे।
परं तस्य चितं समेषां हि कार्ये सदा लग्नमासीदतस्मान् सिषेवे।।[27]

अर्थात्– जब वे आठ वर्ष के शिशु थे तभी उनके घर में स्वयं लक्ष्मी क्रीडा करती थी, किन्तु उनका मन सार्वजनिक कार्यों में नहीं लगता था। अतः वे जनता की सेवा में ही संलग्न रहते थे।

उपर्युक्त पद्य में सुभाषचन्द्रबोस के घर की सम्पन्नता का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि उनको घर में अनेक सुख–सुविधाएं प्राप्त थी, परन्तु उन्होंने कभी उनका लाभ प्राप्त नहीं किया। माता लक्ष्मी द्वारा स्वयं उनके (सुभाषचन्द्र बोस के) घर में क्रीडा करना आलम्बन विभाव हैं। किन्तु उनका मन भोग–विलासिता में न लगकर सार्वजनिक कार्यों में ही लगा रहना, उद्दीपन विभाव है। जनता की सेवा में ही एकाग्र रहना अनुभाव है। प्राणियों पर दया इत्यादि इसके व्यभिचारी भाव हैं। शम स्थायी भाव होने से इसमें शान्त रस है।

सदैवैकवारं कृतं भोजनन्तु तथा युग्मवस्त्री पृथिव्यां शयानः।
स्वपित्रादिभिः सर्वदा निन्दितोऽपि स साधारणं जीवनं स्वीचकार।।[28]

अर्थात् वे सदा एक बार ही भोजन करते थे और केवल दो वस्त्र धारण करते हुए पृथ्वी पर ही सोते थे। अपने पिता आदि के द्वारा सदा निन्दा किये जाने पर भी उन्होंने सादा जीवन ही अपनाया।

उपर्युक्त पद्य में सुभाषचन्द्र बोस के द्वारा सदा एक बार ही भोजन करना और केवल दो वस्त्र धारण करना आलम्बन विभाव है। पृथ्वी पर सोना उद्दीपन विभाव है। अपने पिता के द्वारा निन्दा किए जाने पर भी सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करना अनुभाव है। निर्वेद इसमें व्यभिचारी भाव है। शम स्थायी भाव होने के कारण शान्त रस है।

अद्भुत रस

लक्षण –साहित्यदर्पणाचार्य विश्वनाथ के अनुसार अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय होता है। गन्धर्व इसका देवता है। यह पीतवर्ण वाला है। अलौकिक वस्तु इसका आलम्बन विभाव है। उस अलौकिक वस्तु के गुणों की महिमा ही उद्दीपन विभाव है। स्तम्भ, स्वेद, रोमा×च गद्गद स्वर, सम्भ्रम तथा नेत्रविकासादि इसके अनुभाव हैं। इसी प्रकार वितर्क, आवेग, सम्भ्रान्ति तथा हर्षादि व्यभिचारी भाव होते हैं।[29]

श्रीसुभाषचरितम् महाकाव्य में अद्भुत रस का उदाहरण इस प्रकार है–

अभावं हि तस्य स्वदेशे विलोक्य महद्दुःखासिन्धौ निमग्ना हि सर्वे।
रहस्यं न विज्ञाय लोपस्य तस्य भृशं विस्मितः सर्वकारोऽपि जातः।।[30]

अर्थात् अपने देश में उन्हें न पाकर सभी अत्यन्त चिन्तित हो दुःख सागर में डुबकी लगाने लगे। उनके इस पलायन का रहस्य न समझकर सरकार भी अत्यधिक विस्मित हुई।

उपर्युक्त पद्य में सुभाषचन्द्र बोस की चतुरता तथा कुशाग्र बुद्धि होने का वर्णन किया गया है, जो सभी को चकित कर देती थी। इसमें अपने देश में नेता जी का न होना अथवा उनका अभाव 'आलम्बन–विभाव' है। इस अवस्था में सबका चिन्तित होकर दुःख सागर में डुबकी लगाना, 'उद्दीपन विभाव' है। उनके इस पलायन का रहस्य न समझकर सरकार द्वारा भी अत्यधिक विस्मित होना अनुभाव है। औत्सुक्य, आवेग, चिन्ता इत्यादि इसके व्यभिचारी भाव हैं। विस्मय स्थायी भाव होने के कारण अद्भुत रस की अनुभूति होती है। अतः इसमें अद्भुत रस है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि महाकाव्यकार त्रिगुणानन्द शुक्ल रसों के उत्कृष्ट ज्ञाता थे। उन्होंने महाकाव्य श्रीसुभाषचरितम् में अनेक रसों का वर्णन किया है, परन्तु वीर रस का उल्लेख सम्पूर्ण महाकाव्य में प्रदर्शित होता है। जिसके अध्ययन मात्र से ही देशभक्ति की भावना जागृत होती है।

सन्दर्भ

1. श्रीसुभाषचरितम् – पृ0 सं0 199
2. पुत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
3. श्रीसुभाषचरितम् – पृ0 सं0 211
4. साहित्यदर्पण– 3/2 'ब्रह्मास्वादसहोदरः'
5. वाल्मीकी रामायण– 1/2/15
6. वाल्मीकी रामायण– 1/4/9
   रसैः शृर्ङांरकरूणहास्य रौद्र भयानकैः।
   वीरादिभि रसैर्युक्तं काव्यमेतदगायताम्।।
7. अग्निपुराण–176/8–9
   शृर्ङांरहास्यकरूण रौद्रवीरभयानकाः।
8. नाट्यशास्त्रम्–छठा अध्याय, पृ0 सं0 228
9. वही0– छठा अध्याय, पृ0 सं0 228
10. साहित्यदर्पण–1रु3 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'।
11. वही0–3/1
    ''विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
    रसतामेति रत्यादिः स्थायीभावः सचेतसाम्''।।
12. दशरूपकम्–4/2

13. साहित्यदर्पण–3 / 131
''उद्दीपनविभावास्ते रसमुद्दीपयन्ति ये''।
14. नाट्यशास्त्र–7 / 5
''वागर्घैभिनयेनेह यतस्त्वक्त्थोऽनुभाव्यते।
शाखार्घैपार्घैसंयुक्तस्त्वनुभावस्ततः स्मृतः।।''
15. दशरूपक–4 / 3
'अनुभावो विकारस्तु भाव संसूचनात्मकः।'
16. दशरूपक–4 / 7
17. नाट्यशास्त्र–6 / 19–22
''निर्वेदग्लानिशर्घैाख्यास्तथासूयामदश्रमाः.....नामतः''।।
18. नाट्यशास्त्र–अध्याय 6, पृ. सं.–228
19. साहित्यदर्पण–3 / 232–234
''उत्तमप्रकृतिर्वीर उत्साहस्थायिभावकः.....चतुर्धा स्यात्''।
20. श्रीसुभाषचरितम्–1 / 23
21. वही.–14 / 11
22. वही.–1 / 27
23. साहित्यदर्पण–3 / 222–225
'इष्टनाशादनिष्टाप्तेः करूणाख्यो रसो भवेत्।
.....विषादजडतोन्मादचिन्ताद्या व्यभिचारिणः'।।
24. श्रीसुभाषचरितम्–15 / 11
25. वही.–1 / 44
26. साहित्यदर्पण–3 / 245–249
''शान्तः शमस्थायिभाव.....
.....निर्वेदहर्षस्मरणमतिभूतदयादयः।।''
27. श्रीसुभाषचरितम्–1 / 39
28. वही, –1 / 40
29. साहित्यदर्पण–3 / 242–245
''अद्भुतो विस्मयस्थायिभावो.....
.....वितर्काावेगसंभ्रान्तिहर्षाद्या व्यभिचारिणः।''
30. श्रीसुभाषचरितम्–1 / 31